अध्याय 20

एथनोमेथडोलॉजी (लोक-विधि विज्ञान)
(Ethnomethodology)

एथनोमेथडोलॉजी का अर्थ

अंग्रेजी भाषा के शब्द एथनो (Ethno) का अर्थ होता है लोक या जन साधारण। जब जन साधारण अपनी धारणाओं को बनाने के लिये कतिपय पद्धतियों को अपनाते हैं तो इसे मेथड (Method) कहते हैं। जब इन पद्धतियों को वैज्ञानिक संदर्भ में अध्ययन किया जाता है तो इसे लॉजी (Logy) कहते हैं। इस भांति *एथनोमेथडोलॉजी लोक या जन साधारण द्वारा प्रयुक्त विधियों का वैज्ञानिक अध्ययन है* :

एथनो (Ethno)	=	लोक/जनसाधारण
मेथड (Method)	=	पद्धति या विधि
लॉजी (Logy)	=	विज्ञान

अतः एथनोमेथडोलॉजी यानि *जन साधारण द्वारा प्रयुक्त विधियों का वैज्ञानिक अध्ययन*।

समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों में जो *फीनोमिनोलोजिकल उपागम है, उनमें एथनोमेथडोलॉजी सबसे अधिक और महत्वपूर्ण विधि समझी जाती है। इस विधि के प्रणेताओं में हेरॉल्ड गारफिंकल* (Harold Garfinkal) का नाम अग्रणी समझा जाता है,। यद्यपि गारफिंकल ने जो कुछ लिखा है वह समाजशास्त्र की मुख्य धारा में नहीं है फिर भी गारफिंकल की कृति सम्मान के साथ याद की जाती है। एथनोमथडोलॉजी सिद्धान्त या समाजशास्त्र पर बहुत अधिक लिखा गया है। जो भी इस सम्बन्धी लिखा गया है उससे भ्रान्तियां भी बहुत पैदा हुयी है। भ्रांतियों के कई कारण हैं, एक तो यह कि हर कोई समाजशास्त्री अपने आपको

एथनोमेथडोलोजिस्ट समझता है। और फिर वह जो कुछ लिखता है, ज्यादातर अस्पष्ट और ऐसे गर्त में है जिसे समझ पाना बहुत मुश्किल है।

एथनोमेथडोलॉजी के क्षेत्र में एक गलतफहमी यह है कि यह सिद्धान्त जो भी समाजशास्त्रीय सिद्धान्त है, उन्हें सुधारने का दावा करता है। एथनोमेथडोलॉजिस्ट कहते हैं कि उनकी अध्ययन पद्धति में कोई भी विकार नहीं है। दूसरी गलतफहमी इस विद्या के बारे में यह है कि यह एकदम हल्की-फुल्की और नरम (soft) विधि है। एथनोमेथडोलॉजिस्ट अपने अध्ययन क्षेत्र में सहभागी अवलोकन करता हुआ इस तथ्य की खोज करता है कि किस भांति लोग दिन प्रतिदिन की घटनाओं को स्वीकृत मानकर चलते हैं। वास्तव में यह एथनोमेथडोलॉजी के प्रति बड़ा ही नरम रुख है। *सच्चाई यह है कि एथनोमेथडोलॉजी लोगों की धारणाओं पर जोर देता हुआ यह देखता है कि इन धारणाओं को बनाये रखने में, इन्हें निरन्तरता देने में लोग किन विधियों को काम में लाते हैं। इन विधियों का अध्ययन ही एथनोमेथडोलॉजी करती है*। उदाहरण के लिये यदि किसी जाति का सदस्य जाति से बाहर यानि अन्तर्वैवाहिकी समूह के बाहर विवाह करता है और जाति उसे दण्ड नहीं देती तो भविष्य में सभी लोग ऐसा करने लग जायेंगे और जाति की पहचान ढीली और कमजोर पड़ जायेगी। किन्तु जाति के मुखिया और सदस्य इस चुनौती का मुकाबला करते हैं और अन्तर्जातीय विवाह करने वाले व्यक्ति को जाति से बाहर निकालते हैं। उसे पृथक करने के लिये, उसके साथ बोल चाल बन्द कर देते हैं। आर्थिक सम्बन्ध भी तोड़ देते हैं। इसके पीछे उनकी मंशा यह है कि जाति की व्यवस्था बनी रहे। और जो कोई उसे आंच पहुंचाने की कोशिश करे, उसे सबक दिये जाये। इस दृष्टांत में जाति व्यवस्था को बनाये रखना एक *धारणा* (Presumption) है। यह धारणा टूटे नहीं, इसकी निरन्तरता बनी रहे। इसके लिये जाति बहिष्कार, सम्पर्क बहिष्कार आदि जिन विधियों को सदस्यों ने अपनाया है, ऐसी विधियों का अध्ययन ही एथनोमेथडोलॉजी है।

समाज और सामाजिक संरचना बहुत जटिल है। उन्हें बनाये रखने के लिये किसी पुलिस या फौज की जरूरत नहीं होती। समाज और संरचना बनी रहे, इनकी पहचान सुदृढ़ रहे, इसके लिये लोक जीवन के कुछ तौर-तरीके हैं। समाज के नियम, उपनियम व्यवस्था आदि को बनाये रखने के लिये जन-जीवन जिन विधियों और तरीकों को काम में लेता है, वही सब कुछ एथनोमेथडोलॉजी है। अधिक सरल शब्दों में कहेंगे कि *एथनोमेथडोलॉजी उन विधियों का अध्ययन करता है जिनके माध्यम से लोगों की धारणाएं बनी रहती है* या उनमें परिवर्तन लाया जाता है। हिन्दी में कई बार इसे *लोक विधि विज्ञान* भी कहते हैं। लोक अर्थात् जनसाधारण या समाज, संरचना को बनाये रखने के लिये जिन विधियों को काम में लेते हैं, उन विधियों का अध्ययन ही लोक-विधि विज्ञान है।

एथनोमेथडोलॉजी के अर्थ को थोड़ा और विस्तार से देखना होगा। यह इसलिये कि इसके प्रयोग में एक तरह की अराजकता आ गयी है। कुछ समाजशास्त्रियों के लिये तो

एथनोमेथडोलॉजी का प्रयोग ही उन्हें आधुनिकतम बना देता है। बहुत से समाजशास्त्री तो इसका प्रयोग फैशन के रूप में करते हैं। इस अवधारणा के प्रणेता गारफिंकल ने जब इसका प्रयोग किया तो उन्होंने तकनिकी अर्थों में कहा कि *एथनों का संदर्भ अपने समाज या समूह के सदस्यों में समाज के बारे में जो सहज बुद्धि ज्ञान* (Common Sense Knowledge) है, उससे है। यह समाज सम्बन्धी सहजबुद्धि ज्ञान *एथनो* (Ethno) की परिभाषा में आता है। इस एथनों का वृहद् अर्थ समाज के सदस्य *लोक* (Folk) या *लोगों* (People) से है। इस सबको मिलाकर गारफिंकल कहते हैं कि लोग दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों के प्रति सहज बुद्धि ज्ञान रखते हैं। इससे स्पष्ट है कि दिन-प्रतिदिन की ये गतिविधियां सामान्यतया लोग स्वीकृत मानकर चलते हैं। इन गतिविधियों का अर्थ निकालने की आवश्यकता भी लोगों को नहीं पड़ती। और लोगों को यह अर्थ निकालने की आवश्यकता भी क्या है? क्योंकि वे तो इसे सहज रूप से व्यवहार में लाते रहते हैं। गारफिंकल एथनोमेथडोलॉजी के इस आधार-वाक्य को लेकर चलते हैं और इसका समस्या के रूप में विश्लेषण करते हैं।

एथनोमेथडोलॉजी की अवधारणा एवं नियम

एथनोमेथडोलॉजी की अवधारणाओं और नियमों में सर्वसम्मति हो ऐसा नहीं है। कई एथनोमेथडोलॉजिस्ट्स बहस करते हैं कि क्या जीव-जगत या प्राकृतिक अभिवृतियां और यथार्थतायें एक हैं या अनेक? इस विवाद के होते हुये भी सभी एथनोमेथडोलॉजिस्ट इस प्रयास में हैं कि ऐसी अवधारणाओं और नियमों को विकसित किया जाये जिनके माध्यम से इस तथ्य का पता लगे कि वास्तविकता के बनने में लोगों का योगदान क्या होता है। एथनोमेथडोलॉजिस्ट यह जानना चाहते हैं कि लोगों द्वारा बनायी गयी जो यथार्थता है उसका रख रखाव कैसे होता है? और वह किस प्रकार बदलती है? लोगों में यथार्थ के प्रति जो भी बोध है उनके निर्माण के लिये कोई ऐसी अवधारणायें या प्रस्ताव नहीं है जो सर्वसम्मत हो। फिर भी यहां हम उन अवधारणाओं और नियमों का उल्लेख करेंगे जो एथनोमेथडोलॉजी सिद्धान्त में केन्द्रीय है। इन अवधारणाओं को टर्नर एथनोमिथडोलॉजी की *प्रमुख अवधारणा* (Key Concepts) मानते हैं।

(1) आत्मवाचक क्रिया और अन्तःक्रिया
(Reflexive Action and Interaction)

हमारी अधिकांश अन्तःक्रियाएं यथार्थ या वास्वविकता को बनाये रखने के लिये होती हैं। ऐसी अन्तः क्रियाएं आत्मवाचक (Reflexive) होती हैं। इन क्रियाओं का केन्द्र स्वयं व्यक्ति होता है। इन क्रियाओं में धार्मिक अनुष्ठान, कर्मकाण्ड, आदि होते हैं। व्यक्तियों की यह मान्यता है कि इस संसार को परमात्मा ने बनाया है। और परमात्मा ही हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन को नियन्त्रित व संचालित करता है। किसी भी कर्मकाण्ड या पूजा पाठ का उद्देश्य इसी विश्वास से चलता है कि परमात्मा को प्रसन्न रखा जाये। इस तरह कि गतिविधि जो कर्मकाण्ड से जुड़ी हुयी है, आत्मवाचक अन्तःक्रिया है। ऐसा भी होता है कि कई बार

कर्मकाण्ड क्रिया के करने पर भी अपेक्षित परिणाम नहीं निकलते फिर भी लोग अपने विश्वास में किसी तरह की दरार नही आने देते। उदाहरण के लिये लोगों का विश्वास है कि पर्याप्त वृष्टि के लिये यज्ञ करने चाहिये। यज्ञ से इन्द्रदेव प्रसन्न होते हैं और पर्याप्त वर्षा हो जाती है। यह विश्वास आत्मवाचक है। इससे आगे जब यज्ञ कर लेने पर भी वर्षा नहीं होती तो इससे लोगों के विश्वास में कोई कमी नहीं आती। वे तर्क देते हैं कि यज्ञ पूरी निष्ठा से नहीं किया था, विधिवत् रूप से सम्पन्न नहीं हुआ.। इसी कारण वर्षा नहीं हुयी। प्रत्येक स्थिति में आत्मवाचक अन्तःक्रिया और अस्तित्व जन मानस में बना रहता है। *ऐसा व्यवहार* विश्वास को बनाये रखता है। उसे सुदृढ़ता देता है और यह सब उस स्थिति में भी होता रहता है जबकि विश्वास यथार्थ द्वारा जुठला दिया जाता है।

यदि हम एथनोमेथडोलॉजी का अवधारणात्मक विश्लेषण करें तो स्पष्ट हो जायेगा कि मनुष्यों की अधिकांश अन्तःक्रियाएं आत्मवाचक होती हैं। सामान्यतया लोग दूसरों की भाव-भंगिमा, शब्द, सूचना आदि जो यथार्थता को बताते है आत्मवाचक पद्धति से विश्लेषित किये जाते हैं। ऐसे प्रमाण भी मिलते हैं। जो यथार्थता के अनुरूप नहीं होते फिर भी लोगों का मन करता है कि ये घटनाएं गलत नहीं हो सकती। आत्मवाचक अवधारणा बराबर हमें यह बताती है कि लोग अपनी अन्तःक्रियाओं से किसी विशेष यथार्थ को बराबर बनाये रखते हैं। एथनोमेथडोलॉजी का अध्ययन इस प्रश्न पर अधिक केन्द्रित होता है कि आत्मवाचक क्रियाएं किन परिस्थितियों और प्रसंगों पर देखने को मिलती है।

(2) *संदर्भितता का अर्थ (The Indexicality of Meaning)*

बीमार व्यक्ति आपात स्थिति में डॉक्टर से मिलता है। तुरन्त जांच करने के बाद डॉक्टर मरीज को सलाह देता है कि उसे दो गोलियां तो तत्काल लेनी है और दो सोते समय। बाल मंदिर में हाल में प्रवेश लेने वाला बच्चा हिचकियां लेकर रोता है। अध्यापिका कहती है : लो हम तुम्हें खाने को *गोली* देते हैं। दोनों ही दृष्टान्तों में गोली शब्द का प्रयोग हुआ है। लेकिन दोनों के संदर्भ जुदा है। डॉक्टर का गोली से संदर्भ *दवा की गोली* से है जबकि अध्यापिका की गोली एक *मीठी टॉफी* है। एथनोमेथडोलॉजी का तर्क है कि हमारे जो भी प्रतीक हैं– हंसना, रोना, गाना, नाचना, दांत भींचना, इन सब का अर्थ किसी न किसी संदर्भ में होता है और इसलिये अन्तःक्रियाओं में प्रतीकों का अर्थ अनुक्रमणिक यानि संदर्भ युक्त होता है। हंसी कई तरह की होती है: व्यंग्यात्मक, प्रशंसात्मक, संवेगात्मक इत्यादि। हंसी के इन विभिन्न प्रकारों को विशेष संदर्भ में ही सही तरीके से समझा जा सकता है।

एथनोमेथडोलॉजी उपरोक्त दो अवधारणाओं– आत्मवाचक और संदर्भ के माध्यम से अन्तःक्रियाओं का विश्लेषण करता है। ये अन्तःक्रियाएं हमारे इर्द-गिर्द के समाज के विश्लेषण में सहायक हैं। हम बराबर कहते आ रहे हैं कि एथनोमिथडोलॉजी के कई प्रकार व रूप हैं। इन विभिन्नताओं के होते हुये भी जहां तक इन दो अवधारणाओं व नियमों का प्रश्न है, यहां कोई विवाद नहीं करता।